महिला शिक्षा और काम का अधिकार मेला
8 और 9 सितम्बर 2009
आयोजक:- सहजनी शिक्षा केन्द्र निरंतर
स्थान- जैन धर्मशाला

विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर, यह ''महिला शिक्षा और काम का अधिकार मेला'' आयोजित किया गया। यह मेला सहजनी शिक्षा केन्द्र और निरन्तर (दिल्ली) द्वारा आयोजित किया गया। सहजनी शिक्षा केन्द्र ने निरन्तर के सहयोग के साथ 2002 में ललितपुर में काम शुरू किया । अब ये काम मेहरौनी और मड़ावरा ब्लॉक के 70 गांवों में है।

इस दिन का जश्न एक और कारण से भी मनाया जा रहा है। हमारे साथी समूह, खबर लहरिया (चित्रकूट व बांदा जिलों में स्थित), जो कि दलित महिलाओं द्वारा प्रकाशित बुंदेली भाषा का अखबार है को विश्वभर में युनेस्को द्वारा पुरस्कार दिया जा रहा है।

इस मेले में 600 दलित व आदिवासी औरतें इकट्ठा हुईं। मेले में हुई चर्चा पर आधारित एक घोषणा पत्र भी उन्होंने जारी किया। हमारा प्रयास रहा कि महिलायें अपनी संगठित ताकत को समझें। शिक्षा–साक्षरता के बिना महिलाओं की सशक्तिकरण की प्रक्रिया अधूरी है। सहजनी शिक्षा केन्द्र व निरन्तर का उद्देश्य

रहा है कि शिक्षा–साक्षरता के जरिए महिलायें अपनी जिंदगी में बदलाव ला पाएँ। आज के संदर्भ में काम का अधिकार व नरेगा, महिलाओं की जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इससे जुड़े अलग–अलग पहलुओं को समझने और परखने के लिए यह मेला एक अच्छा मंच साबित हुआ। सहजनी शिक्षा केन्द्र द्वारा कई गाँवों से नरेगा के क्रियान्वयन पर जानकारी इकट्ठी की गई। इस जानकारी से बहुत चौंका देने वाले आंकड़े सामने आए। जैसे खटौरा गॉव में 39 दलितों के जॉब कार्ड बने हैं तो 99 सवर्ण जाति के लोगों के। पथराई गॉव में 40 दलितों के जॉब कार्ड बने है तो 70 सवर्णो के। इस प्रकार की जानकारी से यह मेला आयोजित करने के लिए जोश मिला।

मेले के दौरान भी कई सवाल उठाए गए। कई मुद्दे, चर्चा के दौरान निकलकर आए। जैसे– जॉबकार्ड किसके नाम के बने है? यदि हम लुहर्रा गांव का उदाहरण लें, यहॉ 151 आदमियों के जॉब कार्ड बने, और केवल 2 औरतों के। हमने यह भी पूछा कि कार्यस्थल पर महिलाओं को सुविधाएँ मिल रही है या नहीं। महिलाओं ने बताया कि न तो बच्चे खिलाने के लिए सुविधा है और न ही स्वच्छ पीने का पानी। इसके अलावा न तो कहीं सही पैसे मिल रहे है और न ही कहीं सही समय पर पैसे मिल रहे हैं। जैसे गौना गाँव में एक मजदूर को 2 महीने के काम मिला, एक साल में और पैसा 15 दिन का, वो भी 6 महीने वाद। नरेगा के हर नियम के खिलाफ जाया जा रहा है। कहीं काम ठेके से हो रहे है तो कहीं मस्टर रोल ही नहीं है। कई गॉवों में जॉब कार्ड पर फर्जी ऐन्ट्री भी हो रही है। ऐसा देवरान, चौकी और डोंगरा की औरतों ने बताया। न केवल दलितों के जॉब कार्ड सवर्णो से कई कम हैं, पर जाति का फायदा सबसे ज्यादा प्रधानों द्वारा भी उठाया जाता है।

जैसे देवरान और सिमिरिया गाँव का बड़ी जाति का प्रधान बैंक से पैसे निकलवा लेता है और पासबुक भी अपने पास रखता है। नरेगा से जुडे ऐसे ही कई मुद्दों पर सोचने की जल्द जरूरत है।

इस मेले से हम इन सवालों पर ठोस जानकारी हासिल कर पाए हैं। यह आधार बना है हमारे घोषणा पत्र का। हम आशा रखते हैं कि यह घोषणा पत्र और इस मेले की उपलब्धियाँ हम सही अधिकारियों और सरकार तक पहुँचा पाएँगें।

<u>हमारी मांगें है</u>

1. **नरेगा के तहत ज़्यादा से ज़्यादा महिला मजदूरों को काम मिले।**
2. **पूरे साल में उन्हें कम से कम 100 दिन की मजदूरी मिले।**
3. **नरेगा के तहत ऐसे काम लिए जाए, जिनसे औरतों के नाम की सम्पत्ति और संसाधन बनें। जैसे तालाब, खेती लायक ज़मीन, कुआँ आदि।**
4. **जॉब कार्ड और बैंक के खाते महिलाओं के नाम से ही बनें।**
5. **महिलाओं की जरूरतों को अहम मानते हुए कार्यस्थल पर सुविधाओं को लागू करें। जैसे बच्चा खिलाने, छाया, पानी और दवाई की व्यवस्था।**
6. **नरेगा की जानकारी और इसका फायदा महिलाओं तक पहुँचे, खासतौर से दलित व आदिवासी महिलाओं तक।**
7. **सामाजिक ऑडिट नियमित रूप से हो, जिसमें महिलाओं की भागीदारी को परखा जाए।**

हमाओ मेला

9 सितम्बर 2009 | महरौनी | मेला विशेषांक

अलग तरह का मेला

8-9 सितम्बर 2009 राज्य उत्तर प्रदेश जिला ललितपुर ब्लाक महरौनी यहाँ साक्षरता दिवस पर महिला शिक्षण और काम का अधिकार मेला मनाया गया इसको निरंतर संस्था के सहयोग से सहजनी शिक्षा केन्द्र ने आयोजित किया। इस मेले में महरौनी और मडावरा ब्लॉक से 600 महिलाये आई थी। हर दो साल मे अलग-अलग मुद्दो पर यह मेला मनाया जाता है। यह तीसरा मेला है। शिक्षा के माध्यम से महिलाये अपनी जिन्दगी से जुड़े मुद्दो के बारे मे ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल कर सकती है। मेला का मुख्य उद्देश्य था राष्ट्रीय रोजगार गारंटी कानून को लेकर लोग सवाल जवाब करे। जैसे- क्या इस कानून का फायदा गरीब दलित और आदिवासी और खासकर महिलाओ तक पहुंच रहा है? क्या नरेगा मे सरकार की जवाब देही बनी है?

अपनी-अपनी समस्या

महरौनी और मडावरा ब्लाक के लगभग 600 महिलाये मेले मे आई थी। इनके बीच रोजगार गारंटी योजना कानून किस तरह से चल रहा हैं इस पर चर्चा की गई। इस चर्चा के दौरान दोनो ब्लाको के कई गांवो की समस्या एक जैसी सामने आई।

- शुक्लगुवां गॉव से सत्तरह महिलाये इस मेले में आई थी। इनमे से कुछ महिलाओ ने बताया कि हमारे गांव मे रोजगार गारंटी योजना के तहत लोगो को काम तो मिलता हैं पर प्रधान दयाराम मजदूरी नहीं देता। इस लिये मेला में अपनी समस्या बताने आये है।
- मेला मे आई दोनो ब्लॉको की लगभग दस महिलाओ ने कहा रोजगार गारन्टी योजना के काम मे लोगो को कोई सुविधा नहीं दी जाती है यहा तक की मजदूरो को पीने का पानी तक अपने घर से ले जाना पड़ता है। सरकार कानून तो लागू कर देती हैं कानून किस तरह से चल रहा है इस पर ध्यान नही दिया जाता।

एक जनी की बात

"अपनी जिन्दगी मे मैंने बहुत मेले देखे पर पहलीबार इतने सुन्दर मेले मे मैं शामिल हुई हूँ"। 70 साल की सियारानी ललितपुर जिले के मडावरा ब्लाक मे मदनपुर गाँव की निवासी हैं। आओ करे सिया रानी से बातचीत "हमारे यहा मडावरा मे करीला का बहुत बड़ा मेला लगता है वहा जाते हैं तो भगवान से मन्नत मागते है। और कुछ सामान खरीदा और चल दिये घर की डगर। सहजनी मेले मे तो अपने अधिकार की बातें हो रही है। सबसे ज्यादा मजा आया रंगबिरंगी मेडियन के गाने सुनकर। और जो और अपनी उम्र की बूढ़ी औरतन से जी भर के बाते की और दोस्ती भी हो गई।

मेला की रंग बिरंगी यादें

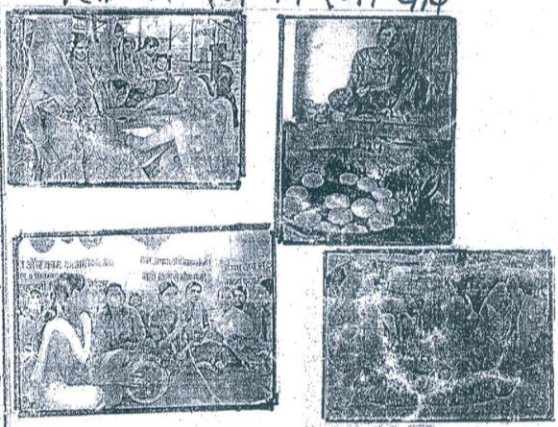

पत्रकार समूह - खबर लहरिया सहयोग- कुसुम, दिशा

मेले के दौरान खबर लहरिया और जनीपत्रिका समूह द्वारा मेला पर निकाली गई पत्रिका

हम अपनी कलम की ताकत और संगठन के जोर से अपने अधिकारों को पाकर रहेंगे !